ओम् शान्ति 24-2-13 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, देश विदेश में शिवबाबा की प्रत्यक्षता का ध्वज फहराने वाले, कोटों में कोई, कोई में भी कोई पदमापदम भाग्यवान आत्मायें, विश्व सेवा के निमित्त बनी हुई टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय मधुर याद के साथ, 77 वीं हीरे तुल्य त्रिमूर्ति शिव जयन्ती की कोटि कोटि बधाईयां।

बाद समाचार - आप सभी हर वर्ष की भांति इस महाशिवरात्रि के महान उत्सव पर अपने प्यारे शिव भोलानाथ बाप को प्रत्यक्ष करने की भिन्न-भिन्न सेवायें कर रहे होंगे। बापदादा ने भी विशेष इशारा दिया है बच्चे अपने प्राप्ति सम्पन्न खुशमिजाज़, खुशनुमा चेहरे द्वारा सबको खुशी का अनुभव कराओ। संगमयुग का सबसे बड़े से बड़ा यह त्योहार हर एक स्थान पर खूब धूमधाम से मनाना है। सम्बन्ध-सम्पर्क वाली आत्माओं को विशेष आमन्त्रित कर उन्हें परमात्म कार्यो से अवगत कराते ईश्वरीय सन्देश देना है। हर वर्ष की भांति शोभा यात्रायें, सर्व धर्म संगोष्ठियां आदि भी आयोजित करनी है। मीडिया द्वारा भी परमात्म अवतरण की खुशखबरी जन-जन को सुनानी है। हर स्थान पर ब्राह्मण आत्मायें संगठित हो शिवबाबा का ध्वज भी फहरायें, साथ-साथ स्व परिवर्तन हेतु अपने आपसे दृढ़ता सम्पन्न संकल्प भी लें। इस सीजन में बापदादा ने जो महावाक्य उच्चारण किये हैं, उनमें सात मुख्य संकल्प (वायदे) आपके पास भेज रहे हैं, झण्डा फहराने के पहले निमित्त बहिनें हर एक से यह संकल्प करायें कि -

1- हलचल की परिस्थितियों में भी सदा अचल रह बेहद सेवाओं का कार्य सम्पन्न करेंगे।

2- मेरे को तेरे में परिवर्तन कर सर्व फिकरातों से मुक्त, सदा बेफिक्र बादशाह रहेंगे।

3- सन्तुष्टमणि बन सन्तुष्टता की शक्ति द्वारा समस्या प्रूफ, समाधान स्वरूप बनेंगे। सन्तुष्टता का वायुमण्डल बनायेंगे।

4- ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के लिए पुरुषार्थ का कदम तीव्रता से उठायेंगे। बापदादा की हर आशा को पूर्ण करेंगे।

5- परमात्म स्नेह में समाते हुए मन के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर मनजीत, जगतजीत बनेंगे।

6- सर्व खजानों से सम्पन्न बन, सर्व प्राप्तियों के नशे और खुशी में रहेंगे।

7- कर्मयोगी बन अपने खुशमिजाज़ चेहरे द्वारा खुशियां बांटेंगे, हर आत्मा को खुशी का अनुभव करायेंगे।

——

इन संकल्पों को दृढ़ता से रिवाइज करते हुए **''बाप ने कहा बच्चों ने किया''** ऐसे तीव्र पुरुषार्थ की लहर चारों ओर फैलानी है। अव्यक्त पालना का सबूत प्रत्यक्ष जीवन द्वारा देना ही है।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

नोट:- जहाँ ईमेल की सुविधा नहीं है, कृपया निमित्त टीचर्स बहिनें अपने छोटे बड़े सेवाकेन्द्रों, उपसेवाकेन्द्रों, गीता पाठशाओं के निमित्त भाई बहिनों को भी फोन द्वारा यह संकल्प अवश्य नोट करवा दें। धन्यवाद।